रस

- साधारणतः रस का तात्पर्य 'स्वाद' से है, परंतु साहित्य में रस का शाब्दिक अर्थ 'आनन्द' होता है।
- रस –सम्प्रदाय का आदि आचार्य भरतमुनि को माना जाता है जिन्होने अपनी रचना 'नाट्यशास्त्र' में रस–सूत्र देते है–

''विभावानुभावव्याभिचारी संयोगाद्रसनिष्पति'' ।।

अर्थात विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पति होती है। यह रस दशा ही हृदय का स्थायी भाव है।

- भरतमुनि ने रस को समझने के लिए 4 अवयव निरूपित किए है।

(1) स्थायी भाव

(2) विभाव

(3) अनुभाव

(4) संचारी भाव

(1) स्थायी भाव – वैसे भाव जो हमेशा हमारे मन में स्थायी रूप से विद्यमान होते है। स्थायी भाव कहलाते है।

❖ स्थायी भावों की संख्या 10 मानी जाती है–
रति, हास, शोक, क्रोध , उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय, निर्वेद तथा वात्सल्य ।

(2) विभाव – जिस परिस्थिति / वातावरण को देखकर स्थायी भाव जागृत होता है, विभाव कहलाता है ।

❖ विभाव के दो भेद होते है–

(I) आलंबन – जिस कारण से या जिसकी वजह से स्थायी भाव जागृत होता है आलंबन कहलाता है।

(II) उद्दीपन – स्थायी में उत्तेजना लाना ही उद्दीपन कहलाता है।

(3) अनुभाव – स्थायी भाव उत्पन्न होने के बाद जो मानसिक व शारीरिक क्रियाएँ होती है वह अनुभाव कहलाता है।

(4) संचारी /व्यभिचारी भाव – जो भाव मन में बुलबुले की तरह बनते /बिगड़ते है वह संचारी/व्यभिचारी भाव कहलाता है।

❖ संचारी भावों की संख्या 33 मानी जाती है।

रस के भेद

- भारतीय काव्यशास्त्र में स्थायीभावों की संख्या मूलतः 8 मानी गयी है इसलिए भरतमुनि 8 रसों का उल्लेख करते है।
- वर्तमान समय में भारतीय काव्यशास्त्र में 11 रसों का उल्लेख मिलता है–

(1) श्रृंगार रस – स्थायी भाव – रति (आनंद/तृप्ति)

दो रूप –

(i) संयोग (मिलना)

"बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।

सौंह करै, भौंहनि हँसै, दैन कहै, नटि जाय।"

(ii) वियोग (बिछड़ना)

(2) हास्य रस – स्थायी भाव – हास्य

''बुरे समय को देखकर गंजे तू क्यों रोय
किसी भी हालत मे तेरा, बाल न बांका होय

(3) करूण रस :– स्थायी भाव – शोक (दुःख)

हुआ न यह भी भाग्य अभागा
किस पर विकल गर्व यह जागा
रहे स्मरण ही आते
सखि वे मुझसे कहकर जाते ।

(4) रौद्र रस :– स्थायी भाव – क्रोध (गुस्सा)

उस काल के मारे क्रोध के तन काँपने
उसका लगा, मानो हवा के जोर से
सोता हुआ सागर जगा।

(5) वीर रस – स्थायी भाव – उत्साह (खुशी)

बुन्देलों हरबोलो के मुँह हमने
सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी
वाली रानी थी॥

(6) भयानक रस –स्थायी भाव – भय

मेरे सामने ही कातिल ने उस व्यक्ति की गर्दन पर कुल्हाड़ी से वार कर दिया। उसका सर धड़ से अलग हो गया और गर्दन से खून के फव्वारे निकलने लगे।

(7) वीभत्स रस – स्थायी भाव – घृणा

आँखे निकाल उड़ जाते क्षण भर उड़ कर आ जाते
शव जीभ खींचकर कौवे चुभला-चभला कर खाते ।
भोजन में श्वान लगे मुरदे थे भू पर लेटे
खा माँस चाट लेते थे चटनी सैम बहते बहते बेटे।।

(8) अद्भुत रस – स्थायी भाव – विस्मय /आश्चर्य

देख यशोदा शिशु के मुख में
सकल विश्व की माया
क्षणभर को वह बनी अचेतन हिल
न सकी कोमल काया ।

(9) शांत रस – स्थायी भाव –निर्वेद /वैराग्य

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे
पेड़ खजूर
पंथी को छाया नहीं फल लगे
अति दूर ।

(10) भक्ति रस – स्थायी भाव – ईश्वर के प्रति रति /प्रेम

प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी
जाकी गंध अंग-अंग समाही ।

(11) वात्सल्स रस–स्थायी भाव –वात्सल्य

जसोदा हरि पालने झुलावैं ।
हररावैं दुलरावैं मल्हावैं
जोइ सोइ कछु गावैं।
मेरे लाल को आव री निंदरिया
काहे न आन सुवावैं ।